



वॉल स्ट्रीट: भीतर या बाहर

वॉल स्ट्रीट का एक उकसावा

हर व्यवस्था देर-सबेर एक ही सवाल पूछती है।

यह नहीं कि आप कौन हैं।

यह नहीं कि आप क्या जानते हैं।

यह नहीं कि आप किसमें यकीन रखते हैं।

मायने बस एक सवाल के हैं।

आप भीतर हैं?

या आप बाहर हैं?

बाज़ार इसी उसूल पर चलते हैं।

क्लब इसी उसूल पर चलते हैं।

सरकारें इसी उसूल पर चलती हैं।

दोस्तियाँ तक इसी उसूल पर चलती हैं।

नियम हमेशा अलग-अलग बताए जाते हैं।

तंत्र कभी अलग नहीं होता।

भीतर पहुँचकर लोग इसे अवसर कहते हैं।

बाहर रहकर लोग इसे बहिष्कार कहते हैं।

फिर भी ढाँचा वही का वही रहता है।

वॉल स्ट्रीट इसे धरती की ज़्यादातर जगहों से बेहतर समझती है।

दाम शायद ही कभी रुकावट होता है।

रुकावट है पहुँच।

रुकावट है जानकारी।

रुकावट है सही घड़ी।

रुकावट है जगह।

दुनिया पैसे की कहानियाँ सुनाती है क्योंकि पैसे को समझाना आसान है।

पहुँच को समझाना मुश्किल।

पहुँच मूल्य रचती है, पैसे के आने से बहुत पहले।

पहुँच ताक़त रचती है, अधिकार के आने से बहुत पहले।

पहुँच बाज़ार रचती है, उत्पादों के आने से बहुत पहले।

इसीलिए सबसे अहम फ़ैसला कभी यह नहीं होता कि आप क्या ख़रीदते हैं।

अहम यह है कि आपको उस कमरे में आने दिया जाता है या नहीं जहाँ ख़रीदारी होती है।

सभ्यता बस कमरों का एक संग्रह है।

कुछ दरवाज़े खुले हैं।

कुछ दरवाज़े बंद हैं।

ज़्यादातर लोग अपनी ज़िंदगी ताले को ताकते हुए गुज़ार देते हैं।

कुछ गिने-चुने अपनी ज़िंदगी एक और दरवाज़ा बनाने में गुज़ारते हैं।

फर्दिनांदो फ्रेगा